पाठ-12

अशोक का शस्त्र-त्याग

(पहला दृश्य)

(एक मैदान में मगध के सैनिकों के शिविर लगे हैं। बीच में मगध की पताका फहरा रही है। पताका के पास ही सम्राट अशोक का शिविर है। संध्या बीत चुकी है। आकाश में तारे चमकने लगे हैं। शिविरों में दीपक जल गए हैं। अपने शिविर में अशोक अकेले टहल रहे हैं। उनके मुख पर चिंता की छाया है। वे कुछ सोचते हुए आसन पर बैठ जाते हैं।)

DAILY ASSAM

अशोक : *(स्वत:)* आज चार साल से युद्ध हो रहा है और कलिंग आज भी जीता नहीं जा सका है। दोनों ओर के लाखों आदमी मारे गए हैं, लाखों घायल हुए हैं, पर हम आज भी असफल हैं। क्या होगा इसका परिणाम ?

द्वारपाल : *(सिर झुकाकर)* राजन! संवाददाता आना चाहता है।

अशोक : आने दो।

संवाददाता : *(प्रवेश कर)* महाराज अशोक की जय हो। शुभ संवाद है। गुप्तचर समाचार लाया है कि कलिंग के महाराज लड़ाई में मारे गए हैं।

अशोक : *(प्रसन्नतापूर्वक)* मारे गए हैं! तो मगध की विजय हुई है! कलिंग जीत लिया गया है! *(संवाददाता चुप रहता है।)*

अशोक : बोलते क्यों नहीं हो तुम? चुप क्यों हो?

संवाददाता : *(धीरे से)* बोलूँ क्या महाराज! कलिंग-दुर्ग के फाटक आज भी बंद हैं। फिर किस मुँह से कहूँ कि कलिंग जीत लिया गया।

अशोक : *(उत्तेजित होकर)* कलिंग के फाटक आज भी बंद हैं?

संवाददाता : हाँ महाराज! कलिंग के फाटक आज भी बंद हैं।

अशोक : *(उत्तेजित होकर खड़े होते हुए)* बंद हैं तो खुल जाएँगे। जाओ, जाकर सेनापति से कह दो कि कल सेना का संचालन मैं स्वयं करूँगा। कल या तो कलिंग के दुर्ग के फाटक खुल जाएँगे या मगध की सेना ही वापस चली जाएगी। जाओ *(हाथ से जाने का संकेत करते हैं)।*

(दूसरा दृश्य)

(दूसरे दिन प्रात:काल का समय। शस्त्र-सज्जित अशोक घोड़े पर बैठे हैं। उनके पास उनका सेनापति है। सामने कलिंग-दुर्ग है, जिसके फाटक बंद हैं।)

अशोक : मेरे वीर सैनिको! आज चार साल से युद्ध हो रहा है, फिर भी हम इस कलिंग को जीत नहीं पाए हैं। उसके किसी दुर्ग पर मगध की पताका नहीं फहरा रही है। कलिंग के महाराज मारे गए हैं। उनके सेनापति पहले ही कैद हो चुके हैं, फिर भी कलिंग आत्मसमर्पण नहीं कर रहा है। आओ, आज हम अपनी मातृभूमि की शपथ लेकर प्रण करें कि या तो हम कलिंग के दुर्ग पर अधिकार कर लेंगे या सदा के लिए मृत्यु की गोद में सो जाएँगे।

सब सैनिक : *(तलवार खींचकर)* मगध की जय! सम्राट अशोक की जय!

(सहसा दुर्ग का फाटक खुल जाता है। सब आश्चर्य से उधर देखने लगते हैं। उनकी तलवारें खिंची की खिंची रह जाती हैं। शस्त्र-सज्जित स्त्रियों की विशाल सेना फाटक के बाहर निकलने लगती है। सेना के आगे पुरुष भेष में एक वीरांगना है, जो सैनिक भेष में साक्षात् चंडी-सी दिखाई देती है। यह कलिंग महाराज की लकड़ी पद्मा है। स्त्रियों की सेना अशोक

DAILY ASSAM

की सेना से कुछ दूरी पर रुक जाती है। अशोक के सिपाही मंत्रमुग्ध-से देखते रह जाते हैं। अशोक भी चकित रह जाते हैं।)

पद्मा : *(आगे बढ़कर अपनी सेना से)* बहिनो! तुम वीर-कन्या, वीर-भगिनी और वीर-पत्नी हो। मुझे तुमसे कुछ नहीं कहना है। जिस सेना ने तुम्हारे पिता, भाई, पुत्र और पति की हत्या की है, वह तुम्हारे सामने खड़ी है। आज उसी से तुम्हें लोहा लेना है। तुम प्रण करो कि जननी जन्म-भूमि को पराधीन होते देखने के पहले तुम सदा के लिए अपनी आँखें बंद कर लोगी।

अशोक : *(स्वत:)* यह कौन है? क्या साक्षात् दुर्गा कलिंग की रक्षा करने के लिए युद्ध-भूमि में उतर आई है? शीर्ष सैनिक भी सभी स्त्रियाँ हैं। क्या स्त्रियों से भी युद्ध करना होगा? क्या अशोक को स्त्रियों का भी वध करना होगा? ना! ना! मैं स्त्री-वध नहीं करूँगा। मुझे विजय नहीं चाहिए। मैं यह पाप नहीं करूँगा। मैं शस्त्र नहीं चलाऊँगा। *(प्रकट)* सैनिको, स्त्रियों पर हाथ न उठाना। *(आगे बढ़कर)* तुम कौन हो देवी?

पद्मा : मैं कलिंग महाराज की कन्या हूँ। मैं हत्यारे अशोक की सेना से लड़ने आई हूँ। जब तक मैं हूँ, मेरी ये वीरांगनाएँ हैं, कलिंग के भीतर कोई पैर नहीं रख सकता। कहाँ है अशोक, कहाँ है मेरे पिता का हत्यारा? मैं उससे द्वंद्व-युद्ध करना चाहती हूँ।

अशोक : अशोक तो मैं ही हूँ राजकुमारी। दोषी मैं ही हूँ। परंतु तुम स्त्री हो, तुम्हारी सेना भी स्त्रियों की है। मैं स्त्रियों पर शस्त्र नहीं चलाऊँगा।

पद्मा : क्यों महाराज?

अशोक : शास्त्र की आज्ञा है राजकुमारी!

पद्मा : और शास्त्र की आज्ञा है कि तुम निरपराधियों की हत्या करो? शास्त्र की आज्ञा है कि तुम अपनी विजय-लालसा पूरी करने के लिए लाखों माताओं की गोद सूनी कर दो? लाखों स्त्रियों की माँग का सिन्दूर पोंछ दो? फूँक दो उस शास्त्र को, जो तुम्हें यह सिखाता है। मैं तुमसे शास्त्र सीखने नहीं आई हूँ, शस्त्रों से युद्ध करने आई हूँ। तुम हत्यारे हो, मैं अपनी बलि चढ़ाकर तुम्हारी खून की प्यास बुझाने आई हूँ। अपने सिपाहियों से कहो कि तलवार उठाएँ, कलिंग की स्त्रियाँ तुमसे कुछ नहीं चाहतीं, केवल युद्ध चाहती हैं।

DAILY ASSAM

(अशोक सिर झुका लेते हैं।)

पद्मा : क्यों, सिर क्यों झुका लिया महाराज? मैं युद्ध चाहती हूँ, केवल युद्ध। आज आपके भीषण युद्ध की पूर्णाहूति होगी।

अशोक : बहुत हो चुका राजकुमारी। मैं अब युद्ध नहीं करूँगा कभी युद्ध नहीं करूँगा *(तलवार नीचे फेंक देते हैं।)*

पद्मा : यह क्या महाराज!

अशोक : *(अपने सैनिकों से)* तुम भी अपनी तलवारें नीचे फेंक दो। आज से अशोक तुम्हें कभी किसी पर आक्रमण करने की आज्ञा नहीं देगा। फेंक दो अपनी तलवारें।

(सभी सैनिक अपनी-अपनी तलवारें फेंक देते हैं।)

पद्मा : *(आगे बढ़कर)* मैं भुलावे में नहीं आ सकती महाराज! मैं तुमसे युद्ध करूँगी। मुझे अपने पिता का बदला लेना है।

अशोक : *(सिर झुकाकर)* तो लीजिए बदला राजकुमारी। मैं अपराधी हूँ। जिस अशोक ने लाखों का सिर काटा है और जिस अशोक का सिर आज तक किसी के आगे नहीं झुका, वह आपके आगे नत है। काट लीजिए इस सिर को। मैं हथियार नहीं उठाऊँगा। मेरी प्रतिज्ञा अटल है।

(अशोक सिर झुकाकर खड़े हो जाते हैं।)

पद्मा : तो जाइए महाराज! स्त्रियाँ भी निहत्थों पर वार नहीं करेंगी। आप अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा के लिए जीवित रहिए।

(अपनी स्त्रियों की सेना के साथ दुर्ग में चली जाती है।)

(तीसरा दृश्य)

(अशोक और उनके सभी सरदार पीले वस्त्र धारण किए हुए हैं। उनके सामने एक बौद्ध भिक्षु बैठे हुए हैं।)

DAILY ASSAM

बौद्ध भिक्षु : *(अशोक से)* कहो, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि .....

अशोक : मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि .....

बौद्ध भिक्षु : जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे .....

अशोक : जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे .....

बौद्ध भिक्षु : अहिंसा ही मेरा धर्म होगा।

अशोक : अहिंसा ही मेरा धर्म होगा।

बौद्ध भिक्षु : मैं सबसे प्रेम करूँगा और मेरी करुणा का सदाव्रत आप सबको मिलेगा।

अशोक : मैं सबसे प्रेम करूँगा और मेरी करुणा का सदाव्रत आप सबको मिलेगा।

बौद्ध भिक्षु : प्रतिज्ञा करो कि जब तक जीवित रहूँगा, अपनी प्रजा की भलाई करूँगा। सब प्राणियों को सुख और शांति पहुँचाने का प्रयत्न करूँगा। सब धर्मों को समान दृष्टि से देखूँगा।

अशोक : मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं शक्तिभर आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।

बौद्ध भिक्षु : बोलो –

बुद्धं शरणं गच्छामि।
धर्मं शरणं गच्छामि।
संघं शरणं गच्छामि।

सभी : बुद्धं शरणं गच्छामि।
धर्मं शरणं गच्छामि।
संघं शरणं गच्छामि।

(पटाक्षेप)

*('अशोक का शस्त्र-त्याग' शीर्षक एकांकी में एकांकीकार **वंशीधर श्रीवास्तव** जी ने सम्राट अशोक की कलिंग विजय तथा उसी महत्वपूर्ण घटना के पश्चात उनके शस्त्र-त्याग के महान संकल्प के विषय पर आलोकपात किया है। कलिंग की सेना चार साल तक मगध की सेना से लड़ती रही। उनके सेनापति बंदी हो गए, महाराजा भी युद्ध में निहत हुए। फिर भी कलिंग के निवासी अपने देश की रक्षा के लिए मर-मिटने तक प्रस्तुत थे। अंत में राजकुमारी पद्मा स्वयं सैन्य संचालन का भार लेकर स्त्रियों की सेना सहित युद्धभूमि में आ पहुँची। इस घटना से प्रभावित होकर सम्राट अशोक ने शस्त्र-त्याग का संकल्प लिया। हिंसा का पथ परिहार कर उन्होंने अहिंसा का पथ अपना लिया।)*

DAILY ASSAM

अभ्यास-माला

पाठ से

1. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) मगध और कलिंग के बीच कितने सालों से युद्ध हो रहा था?

(ख) कलिंग के महाराज को युद्धभूमि में वीरगति प्राप्त होने के पश्चात युद्ध का भार किसने संभाला?

(ग) राजकुमारी पद्मा ने अपनी सेना से कौन-सा प्रण करने को कहा?

(घ) राजा अशोक ने किससे अहिंसा की दीक्षा ली?

2. उत्तर लिखो :

(क) सम्राट अशोक की चिंता का मूल कारण क्या था?

(ख) दुर्ग के फाटक खुलने पर अशोक और उसकी सेना के चकित होने का क्या कारण था?

(ग) युद्धभूमि में पद्मा को सामने देखकर अशोक के मन में क्या-क्या विचार उठे?

(घ) बौद्ध भिक्षु ने अशोक से क्या-क्या प्रतिज्ञाएँ करवाई थीं?

(ङ) बौद्ध धर्म की किन्हीं दो वाणियाँ लिखो।

पाठ के आसपास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दो :

(क) राजकुमारी पद्मा की तरह हमारे देश में अनेक वीरांगनाएँ अपनी आजादी के लिए युद्धभूमि में उतरी थीं। ऐसी किन्हीं पाँच वीरांगनाओं के नाम बताओ।

(ख) "युद्धभूमि में सैनिक सैनिक होता है - स्त्री या पुरुष नहीं?" इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करो।

3. आओ, समूह में बैठकर चर्चा करें :

सम्राट अशोक के बारे में बहुत-सी सुंदर-सुंदर पुस्तकें उपलब्ध हैं। तुमलोग पुस्तकालय में जाकर उन पुस्तकों को अवश्य पढ़ो और आपस में चर्चा करो।

भाषा-अध्ययन

1. नीचे दी गई बातों को ध्यानपूर्वक पढ़ो :

हम जब लिखते हैं तो कुछ चिह्नों का प्रयोग करते हैं, जैसे- (।), (?), (,), (;), (!), (" ") आदि। ऐसे चिह्नों को **विराम-चिह्न** कहा जाता है। इन चिह्नों के प्रयोग

से लिखी हुई बातों को पढ़ना और उनका सही अर्थ समझना आसान हो जाता है।

कुछ विराम-चिह्नों के नाम निम्नलिखित हैं-

पूर्ण विराम	= ।	**निर्देशक**	= —
अर्ध विराम	= ;	**संयोजक**	= -
अल्प विराम	= ,	**उद्धरण**	= ' ', " "
प्रश्नसूचक	= ?	**कोष्ठक**	= ( ), [ ], { }
विस्मयादिबोधक	= !		

आओ, अब नीचे लिखे वाक्यों में विराम-चिह्नों का प्रयोग करके लिखें :

(क) शाबाश सुबोध ने सुंदर अभिनय किया

(ख) गुरुजी ने कहा तुम लय के साथ कविता पढ़ो

(ग) पिताजी बाजार से सेब केले आम और अनन्नास लाए मिठाई नहीं लाए

(घ) करीम के दोस्त कब आए

(ङ) अरे वह अभी तक नहीं पहुँचा

3. **इन वाक्यों को भूतकाल में बदलकर फिर से लिखो :**

(क) चार साल से युद्ध हो रहा है। .....

(ख) संवाददाता आना चाहता है। .....

(ग) कलिंग के फाटक खुल जाएँगे। .....

4. **इन वाक्यों को अपनी माध्यम भाषा में अनुवाद करके शिक्षक को दिखाओ :**

(क) मैं कलिंग महाराज की कन्या हूँ।

(ख) कलिंग की स्त्रियाँ तुमसे कुछ नहीं चाहतीं, केवल युद्ध चाहती हैं।

(ग) मैं स्वयं सेना का संचालन करूँगा।

(घ) मैं हथियार नहीं उठाऊँगा।

(ङ) अहिंसा ही मेरा धर्म होगा।

5. **शब्दों के क्रम, लिंग, वचन, कारक आदि की त्रुटियों के कारण वाक्य अशुद्ध हो जाता है। अतः वाक्य-रचना के लिए क्रम, लिंग, वचन, कारक आदि का ज्ञान होना आवश्यक है।**

आओ, कुछ अशुद्ध वाक्यों को पढ़ें और उनके शुद्ध रूप भी लिखें :

(क) मैं दही को खाया।

(ख) मेरा घर में मेहमान आए हैं।

(ग) मेरे आँख में एक तिनका पड़ गई। (घ) गुरुजी हमारे घर से वापस लौट गए।

6. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़ो :

(क) सैनिको! आज चार साल से युद्ध हो रहा है, फिर भी हम कलिंग को जीत नहीं पाए हैं।

(ख) बहनो! तुम वीर-कन्या, वीर-भगिनी और वीर-पत्नी हो।

उपर्युक्त रेखांकित शब्द संबोधन कारक के हैं। यहाँ सैनिकों तथा बहनों के स्थान पर **सैनिको!** और **बहनो!** लिखे गए हैं। याद रहे कि बहुवचन होने पर भी संबोधन कारक में अनुनासिकता (बिंदी) का प्रयोग कदापि नहीं होता। जैसे- अरे बच्चो!, मेरे भाइयो!, अरे मित्रो! आदि।

योग्यता-विस्तार

1. प्रस्तुत एकांकी का कक्षा में अभिनय करो।
2. सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रसार-प्रचार के लिए क्या-क्या बीड़ा उठाया? उनके विषय में जानकारी हासिल करो।

परियोजना-कार्य :

सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म ग्रहण करने के बाद प्रजा की भलाई के लिए क्या-क्या कार्य किए थे? इतिहास की पुस्तकों से ज्ञात कर सचित्र परियोजना प्रस्तुत करो और अपने शिक्षक/शिक्षिका को दिखाओ।

आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
फाटक	= दरवाजा	माँग का सिंदूर पोंछ देना	= किसी के पति को मार डालना
संचालन	= परिचालन, नेतृत्व	बुद्धं शरणं गच्छामि	= बुद्ध की शरण में जाता हूँ
फहराना	= लहराना	धर्मं शरणं गच्छामि	= धर्म की शरण में जाता हूँ
सहसा	= एकाएक	संघं शरणं गच्छामि	= संघ (बौद्ध संघ) की शरण में जाता हूँ
लोहा लेना	= मुकाबला करना	पटाक्षेप	= परदा गिरना, समाप्ति
वार	= आक्रमण		
सदाव्रत	= प्रसाद, दान		
गोद सूनी कर देना	= किसी के बच्चे की हत्या कर देना		